भारत सरकार

आयुष मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 4688

28 मार्च, 2025 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

पारंपरिक और आधुनिक दवाओं के संबंध में आम अवधारणा

4688. श्री विशालदादा प्रकाशबापू पाटील:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने देश में परम्परागत और आधुनिक औषधियों के संबंध में जनता की अवधारणा के संबंध में कोई सर्वेक्षण कराया है;

(ख) यदि हां, तो परम्परागत चिकित्सा की तुलना में आधुनिक चिकित्सा को प्राथमिकता दिए जाने के संबंध में सांख्यिकीय आंकड़ों सहित तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और ऐसी प्राथमिकता देने के क्या कारण हैं;

(ग) क्या देश के लोग आधुनिक चिकित्सा पद्धति को पसंद करते हैं और यदि हां, तो सरकार द्वारा देश में आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी के प्रति जागरूकता और विश्वास को बढ़ावा देने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं;

(घ) देश में पारंपरिक औषधियों को अपनाए जाने को प्रोत्साहित करने वाली नीतियों अथवा पहलों का ब्यौरा क्या है;

(ङ) क्या सरकार ने देश में जहां कहीं भी पारम्परिक चिकित्सा को प्राथमिकता दी जाती है, वहां प्रभावकारी कारकों को समझने और स्वास्थ्य परिचर्या में अपनी भूमिका बढ़ाने के लिए प्रयोक्ता प्रोफाइल का विश्लेषण किया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(च) क्या सरकार की पारंपरिक चिकित्सा के पक्ष में आधुनिक चिकित्सा पर निर्भरता को चरणबद्ध रूप से समाप्त करने अथवा कम करने की योजना है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(छ) क्या इस संबंध में कोई सर्वेक्षण कराया गया है और यदि हां, तो इसका ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर

आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

(श्री प्रतापराव जाधव)

(क) और (ख): सरकार ने देश में पारंपरिक और आधुनिक चिकित्सा के बारे में लोगों की धारणा पर कोई सर्वेक्षण नहीं किया है। हालाँकि, आयुष पर पहला विशेष अखिल भारतीय सर्वेक्षण सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (एमओएसपीआई) द्वारा जुलाई, 2022 से जून, 2023 के दौरान राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के 79 वें दौर के एक भाग के रूप में आयोजित किया गया था। उक्त सर्वेक्षण में पाया गया कि पिछले 365 दिनों के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में 94.8 प्रतिशत लोग आयुष चिकित्सा पद्धति से अवगत हैं और 46.3 प्रतिशत लोगों ने बीमारियों की रोकथाम या उपचार के लिए आयुष चिकित्सा पद्धति का उपयोग किया है, जबकि पिछले 365 दिनों के दौरान शहरी क्षेत्रों में 96 प्रतिशत लोग आयुष के बारे में

जानते हैं और 52.9 प्रतिशत लोगों ने बीमारियों की रोकथाम या उपचार के लिए आयुष चिकित्सा पद्धति का उपयोग किया।

(ग) और (घ): देश में लोगों द्वारा पारंपरिक चिकित्सा की तुलना में आधुनिक चिकित्सा को प्राथमिकता दिए जाने के बारे में कोई सांख्यिकीय डेटा उपलब्ध नहीं है। हालाँकि, आयुष मंत्रालय ने पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में जागरूकता और विश्वास को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रयास किए हैं। आयुष मंत्रालय आयुष चिकित्सा पद्धति के विकास और संवर्धन के लिए राज्य/संघ राज्य की सरकारों के माध्यम से राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) की केंद्रीय प्रायोजित योजना को कार्यान्वित कर रहा है और एनएएम दिशानिर्देशों के अनुसार उनकी राज्य वार्षिक कार्य योजनाओं (एसएएपी) में प्राप्त प्रस्तावों के अनुसार उन्हें वित्तीय सहायता प्रदान कर रहा है। इस मिशन में मुख्य रूप से निम्नलिखित के लिए प्रावधान शामिल हैं: -

i. कुल 12,500 स्वीकृत आयुष्मान आरोग्य मंदिर (आयुष) में से मौजूदा आयुष औषधालयों और स्वास्थ्य उप- केंद्रों को आयुष्मान आरोग्य मंदिर (आयुष) के रूप में उन्नत करना।
ii. प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों (पीएचसी), सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों (सीएचसी) और जिला अस्पतालों (डीएच) में आयुष सुविधाओं की सह-स्थापना।
iii. आयुष अस्पतालों, सरकारी औषधालयों और सरकारी/सरकारी सहायता प्राप्त शिक्षण संस्थागत आयुष अस्पतालों को आवश्यक दवाओं की आपूर्ति ।
iv. 10/30/50 बिस्तरों वाले एकीकृत आयुष अस्पतालों की स्थापना।
v. आयुष जन स्वास्थ्य कार्यक्रम।
vi. उन राज्यों में नए आयुष कॉलेजों की स्थापना जहां सरकारी क्षेत्र में आयुष शिक्षण संस्थानों की उपलब्धता अपर्याप्त है।
vii. आयुष स्नातक और आयुष स्नातकोत्तर संस्थानों का अवसंरचनात्मक विकास।

आयुष मंत्रालय ने आयुष चिकित्सा पद्धति के वैश्विक प्रचार और मान्यता के लिए आयुष में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के नाम से एक केंद्रीय क्षेत्र योजना विकसित की है। इस योजना के तहत, मंत्रालय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयुष अनुसंधान, उत्पादों और सेवाओं, शैक्षिक गतिविधियों आदि को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न हितधारकों को सहायता प्रदान करता है।

आयुष मंत्रालय ने गुजरात के जामनगर में एक वैश्विक पारंपरिक चिकित्सा केंद्र स्थापित करने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) को समर्थन दिया है, जिसका कार्यनीतिक लक्ष्य साक्ष्य और शिक्षा, डेटा और विश्लेषण, स्थिरता और इक्विटी, तथा नवाचार और प्रौद्योगिकी पर है, ताकि वैश्विक स्वास्थ्य और सतत विकास में पारंपरिक चिकित्सा के योगदान को अनुकूलित किया जा सके।

मंत्रालय आयुष चिकित्सा पद्धति के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए आयुष में सूचना शिक्षा और संचार (आईईसी) को बढ़ावा देने के लिए केंद्रीय क्षेत्र की योजना को भी कार्यन्वित करता है। इस योजना का उद्देश्य देश भर में आबादी के सभी वर्गों तक पहुँचना है। यह राष्ट्रीय/राज्य आरोग्य मेलों, योग फेस्ट/ उत्सवों, आयुर्वेद पर्वों आदि के आयोजन के लिए सहायता प्रदान करता है। मंत्रालय आयुष पद्धति के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए मल्टी-मीडिया, प्रिंट मीडिया अभियान भी चलाता है।

आयुष मंत्रालय ने 9 वें आयुर्वेद दिवस (दिनांक 29 अक्टूबर, 2024) को "देश का प्रकृति परीक्षण अभियान" नाम से एक अभियान शुरू किया जिसका लक्ष्य आयुर्वेद में वर्णित प्रकृति की अवधारणा के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा करना और उनके स्वास्थ्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के लिए उनकी प्रकृति का आकलन करना था। यह आकलन छात्रों, शिक्षकों, आयुर्वेद चिकित्सकों और आयुर्वेदिक चिकित्सा अधिकारियों सहित समर्पित स्वयंसेवकों की सहायता से एक समर्पित मोबाइल एप्लिकेशन के

माध्यम से किया गया था। मोबाइल ऐप आयुर्वेदिक सिद्धांतों के अनुसार वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) की एक इकाई इंस्टीट्यूट ऑफ जीनोमिक्स एंड इंटीग्रेटिव बायोलॉजी (आईजीआईबी) द्वारा प्रदान किए गए तर्क पर आधारित था। इस अभियान के तहत अब तक 18 वर्ष और उससे अधिक आयु के लगभग 1.4 करोड़ भारतीय नागरिकों का प्रकृति मूल्यांकन किया जा चुका है।

(ङ): राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के 79वें दौर के अनुसार, पिछले 365 दिनों के दौरान आयुष का उपयोग करने वाले परिवारों द्वारा बताए गए सबसे प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:

- 10 में से 7 परिवारों का मानना है कि आयुष दवाएं प्रभावी हैं
- 10 में से 6 परिवारों की आयुष पर आस्था या विश्वास है
- 10 में से 5 परिवारों का मानना है कि दुष्प्रभाव नगण्य हैं
- 10 में से 4 घरों में आयुष का उपयोग किए जाने का कारण था-
  - पिछले अनुभवों से संतुष्ट होना, या
  - कच्चा माल आसानी से उपलब्ध है, या
  - स्थानीय लोगों को यह बात अच्छी तरह पता थी
- 10 में से 3 घरों में आयुष का उपयोग किए जाने का कारण था-
  - आयुष का उपयोग करने की परंपरा या संस्कृति, या
  - यह तथ्य कि आयुष शरीर को मजबूत और पुनर्जीवित करता है, या
  - आयुष दवाएं सस्ती हैं
- 10 में से 2 घरों में आयुष का उपयोग किए जाने का कारण था-
  - आयुष में व्यक्तिगत देखभाल की उपलब्धता, या
  - समग्र कल्याण/पूर्ण देखभाल

(च) और (छ): पारंपरिक चिकित्सा के पक्ष में आधुनिक चिकित्सा पर निर्भरता को समाप्त करने या कम करने की कोई योजना नहीं है। हालाँकि, भारत सरकार प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पीएचसी), सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी) और जिला अस्पतालों (डीएच) में आयुष सुविधाओं के सह-स्थापन की नीति अपनाकर पारंपरिक चिकित्सा को आधुनिक चिकित्सा में एकीकृत करने को बढ़ावा दे रही है, जिससे रोगियों को एक ही स्थान पर विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों के लिए विकल्प मिल सके।

*****